न्याय दर्शन का ज्ञान

B.A. I (Hons) Paper I

न्याय दर्शन का प्रणेता महर्षि गौतम को माना जाता है। न्याय दर्शन के ज्ञान का आधार न्याय सूत्र कहा जाता है। [illegible] प्रमाण से जो ज्ञान [illegible] [illegible] कहा जाता है। [illegible] [illegible] कहा जाता है।

न्याय के प्रमाण शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने का प्रमाण कहते हैं। वात्स्यायन के अनुसार जिसके द्वारा प्रमाता वस्तु प्रमेय (जानने वाला तथा जिसे जाना जाये) का ज्ञान प्राप्त करता है उसे प्रमाण कहते हैं। न्याय दर्शन में प्रमाणों की संख्या चार बतलायी गयी है प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान।

① प्रत्यक्ष प्रमाण — न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रधान प्रमाण है। महर्षि गौतम ने इन्द्रिय अर्थ [illegible] को कहा है लेकिन है ये ज्ञान जो इन्द्रिय संयोग से उत्पन्न हो प्रत्यक्ष ज्ञान [illegible] होता है। इसके लिए किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि न्याय दर्शन [illegible] है। (प्रत्यक्ष कि प्रमाण का) प्रत्यक्ष [illegible] एवं [illegible] प्रमाण को प्रत्यक्ष [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के सामने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के सामने [illegible] [illegible] प्रत्यक्ष [illegible] है किन्तु [illegible] प्रत्यक्ष को [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] के द्वारा [illegible] [illegible] प्रत्यक्ष

है। इस अनुमान में पर्वत पक्ष होता है क्योंकि पर्वत के बारे में अनुमान किया जाता है।
साध्य - पक्ष के संबंध में जो प्रमाणित किया जाता है उसे साध्य कहते हैं।
हेतु - जिसके द्वारा पक्ष में साध्य को बतलाया जाता है।

(3) उपमान - न्याय दर्शन में उपमान को एक प्रमाण के रूप में माना गया है। उपमान के द्वारा प्राप्त ज्ञान को उपमिति कहते हैं। मान लें कि किसी व्यक्ति को नील गाय का ज्ञान नहीं है लेकिन कोई विश्वासी व्यक्ति कहता है कि नील गाय गाय के सदृश होती है, जब वह जंगल में जाता है और उस पशु को देखता है तो तुरंत समझ लेता है कि यह पशु नील गाय है। यह ज्ञान उपमान के द्वारा प्राप्त होने के कारण उपमिति कहलाता है। न्याय दर्शन में उपमान को एक स्वतंत्र प्रमाण माना गया है।

(4) शब्द - न्याय दर्शन में किसी विश्वस्त व्यक्ति के द्वारा कही हुई बात को शब्द ज्ञान कहते हैं। विश्वासी व्यक्ति को आप्त-पुरुष कहा जाता है। कोई व्यक्ति आप्त-पुरुष तभी होता है जब उसका ज्ञान यथार्थ हो। न्याय शब्द को दो प्रकार के मानते हैं लौकिक तथा वैदिक। मनुष्य के वचन लौकिक हैं तथा वेद के रचयिता आप्त पुरुष के द्वारा किया गया है इसलिए इसे वैदिक वाक्य कहते हैं।